भारत पर्व
साप्ताहिक
समय नाद
RNI: MPHIN/2020/86119
हार्दिक शुभकामनाएं
वर्ष-4, अंक-37 | भोपाल, शुक्रवार 16 अगस्त 2024 | पृष्ठ-8, मूल्य-2 रूपये

श्री राजपूत महापंचायत ने मनाया भारत पर्व

11 महाराजाओं को मरणोपरांत भारत रत्न देने की उठी मांग

■ भोपाल

श्री राजपूत महापंचायत के तत्वावधान में रविवार 11 अगस्त को आईटीआई सभागार गोविंदपुरा में भारत पर्व का आयोजन किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री राजपूत महापंचायत 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस के रूप में नहीं मनाकर भारत पर्व के रूप में मनाती आ रही है। इस अवसर पर आयोजित इतिहासकारों और गणमान्य व्यक्तियों की संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता कुंवर राघवेंद्र सिंह तोमर ने 15 अगस्त 1947 के पहले और बाद के इतिहास बताने के साथ राष्ट्र निर्माण में संप्रभुतासम्पन्न राजतंत्रों के योगदान को रेखांकित किया। केवल ब्रिटिश इंडिया के इतिहास और वहां चले राजनीतिक आंदोलन को दिए गए राष्ट्र निर्माण के पूरे श्रेय जैसे नैरेटिव स्थापना के षड्यंत्र की कलई खोली। श्री तोमर ने बताया कि कैसे कश्मीर, राजपूताना, गुजरात, मध्य भारत जैसे देशभर में हजारों वर्षों से स्वतंत्र और संप्रभु राजतंत्रों ने ब्रिटिश इंडिया से अंग्रेजों के जाने के बाद एकीकरण करके आज के भारत का निर्माण किया।

मुख्य अतिथि और करुणाधाम आश्रम के पीठाधीश्वर सुदेश शांडिल्य जी ने जनसमूह को सनातन राष्ट्र की मजबूती से परिचित कराया। वहीं, उन्होंने भारत निर्माण में राजतंत्रों के योगदान को पाठ्यक्रम में शामिल कराने पर जोर दिया।

इस अवसर पर श्री राजपूत महापंचायत ने प्रस्ताव पारित कर राष्ट्र निर्माण महायज्ञ में पूर्णाहुति देने वाले कश्मीर के महाराजा हरी सिंह, जोधपुर के महाराजा हनुमंत सिंह, मेवाड़ के महाराजा भूपाल सिंह, जयपुर के महाराजा मान सिंह द्वितीय, बीकानेर के महाराजा शार्दूल सिंह, रीवा के महाराजा मार्तंड सिंह समेत तत्कालीन 11 प्रमुख महाराजाओं को मरणोपरांत भारत रत्न देने की मांग की गई। आयोजन में अभय सिंह परमार, कुंवर यादवेंद्र सिंह तोमर, उपेंद्र सिंह तोमर, पृथ्वीराज सिंह चौहान, गोपाल सिंह तोमर, सचिन प्रताप सिंह बघेल, सतीश राजपूत, बंटी राजपूत, ज्ञानेंद्र सिंह राठौड़, गोपाल सिंह चौहान, रोबिन सिंह सेंगर, ब्रजभान सिंह सिकरवार समेत संख्या में गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे लेफ्टिनेंट जनरल टीपीएस रावत मजबूत राष्ट्र निर्माण के लिए योग्यता आधारित और आरक्षण विहीन व्यवस्था लागू करने पर बल दिया। साथ ही, भारत पर मंडराते गजवा-ए-हिंद के खतरे से सचेत किया। लेफ्टिनेंट जनरल रावत ने वक्फ बोर्ड को समाप्त करने की बात कही, अन्यथा राजपूतों के लिए भी वक्फ बोर्ड जैसी व्यवस्था लागू करने को कहा, जिसमें राजपूतों द्वारा दिए गए समस्त किले, गढ़, हवेलियां, महल, मंदिर घाट, भूमि आदि संपत्तियां शामिल की जाएं।

भोपाल में सीमए डॉ. मोहन यादव ने किया ध्वजारोहण

भोपाल। देश के 78वें स्वतंत्रता दिवस पर गुरुवार को भोपाल में सुबह करीब 9 बजे लाल परेड ग्राउंड पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने ध्वजारोहण किया। राष्ट्रगान के बाद परेड की सलामी ली। हर्ष फायर के बाद परेड का निरीक्षण किया। मुख्यमंत्री ने प्रदेशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी। मुख्यमंत्री ने अपने संदेश का वाचन किया। सीएम ने पुलिस अफसरों को वीरता पदक से सम्मानित किया। प्रदेश के इतिहास में पहली बार 15 अफसरों को वीरता पदक दिए गए।

मुख्य परेड का नेतृत्व भारतीय पुलिस सेवा के सहायक पुलिस आयुक्त, भोपाल मयूर खंडेलवाल ने किया। परेड में पुलिस बैंड समेत 17 टुकड़ियां शामिल रहीं। इनमें प्रदेश पुलिस बल, विशेष सशस्त्र बल (उत्तरी जोन), महिलाओं का विशेष सशस्त्र बल, जिला बल एवं रेल की संयुक्त टुकड़ी, हॉक फोर्स, एसटीएफ, जिला पुलिस बल, जेल विभाग, शासकीय रेल पुलिस, नगर सेना (होमगार्ड), एनसीसी (सीनियर विंग गर्ल्स), एनसीसी (सीनियर डिवीजन), गाइड गर्ल्स, स्काउट्स बॉयज, शौर्य दल, लाड़ली बहना और अश्वारोही दल रहे। इससे पहले, सुबह

8 बजे कमिश्नर ऑफिस में कमिश्नर डॉ. पवन कुमार शर्मा ने ध्वजारोहण किया। कलेक्टोरेट में कलेक्टर कौशलेंद्र विक्रम सिंह, जिला पंचायत में अध्यक्ष रामकुंवर गुर्जर ने ध्वजारोहण किया। स्वतंत्रता दिवस को लेकर आम लोगों में भी खासा उत्साह है। पूर्व संध्या को उन्होंने अपने घरों पर आकर्षक रोशनी की। भोपाल की ऐतिहासिक इमारतें, सरकारी दफ्तर, मंदिर भी जगमगा उठे।

कभी पराधीन नहीं रहे राजपूत

ब्रिटिश इंडिया को 1947 में आजाद होने के 77 साल बाद भी लोग यही समझते हैं कि आज का पूरा भारत गणराज्य ही अंग्रेजों के अधीन था। इस धारणा का मुख्य कारण इतिहास की गलत जानकारी देने से हुई। झूठा इतिहास लिखा और पढ़ाया गया। 1947 के बाद स्वतंत्र राजतंत्रों के महान योगदान से भारत गणराज्य बना, लेकिन शिक्षा और शासन व्यवस्था अंग्रेजों के चाटुकारों के हाथ रही। इस व्यवस्था के चाटुकार इतिहासकारों ने झूठ गढ़ा और वही पढ़ाया गया। इस शिक्षा प्रणाली ने ही दिल्ली पर काबिज रहे मुगलों और अंग्रेजों को 1947 के बाद पूरे भारत गणराज्य का शासक माना और इतिहास में पढ़ाया।

अजय सिंह
अध्यक्ष, मप्र पेट्रोलियम डीलर्स एसोसिएशन

मुगलों और अंग्रेजी के समय भारत में सैकड़ों ऐसी रियासतें थी, जिन्होंने कभी भी मुगलों और अंग्रेजों की पराधीनता स्वीकार नहीं की। हां, कुछ रियासतों के शासकों ने अपने नागरिकों के हित में अंग्रेजों से युद्ध निषेध संधियां अवश्य कीं। आज भी कई देश एक-दूसरे से युद्ध नहीं लड़ने की संधि करते हैं, ऐसी संधि को गुलामी हरगिज नहीं कहा जा सकता। उल्लेखनीय है कि रियासतों में सबसे बड़ी संख्या राजपूत शासकों की रही है, जिन्होंने कभी भी पराधीनता स्वीकार नहीं की। वे हमेशा स्वतंत्र रहे। देश के जिन हिस्सों पर अंग्रेज काबिज थे, वह ब्रिटिश इंडिया कहा जाता था। जब ब्रिटिश इंडिया आजाद हुआ, तब लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के आह्वान और हिंदू एकता को सर्वोपरि रखते हुए राजतंत्रों ने रियासतें देकर भारत गणराज्य का निर्माण किया। इनमें सबसे ज्यादा रियासतें क्षत्रिय राजपूत शासकों की थीं। क्षत्रिय राजपूतों खून में में त्याग और समर्पण की भावना रची बसी है। वामपंथियों ने राजपूतों के इतिहास से सर्वाधिक खिलवाड़ किया। अधिकांश राजपूत रियासतें एक दूसरे को युद्ध और आपदा के समय परस्पर सहयोग देती थीं, जिसका विवरण इन वामपंथियों ने कभी नहीं किया।

समाज के लिए संदेश

समाज के लिए मेरा संदेश है कि जो समाज इतिहास से सबक और शिक्षा नहीं लेता है, वो उन्नति की राह पकड़ ही नही सकता। आज देखें तो हिंदू विभक्त हो रहा है। पहले राजपूतों ने संपूर्ण हिंदू समाज को संगठित कर कर रखा था। अधिकांश रियासतों में हिंदुत्व को मानने वाली विभिन्न जातियां वास करती थीं। सभी राजपूतों के नेतृत्व को स्वीकार करती थीं। इसलिए वामपंथियों ने सबसे पहले राजपूतों को विभक्त किया, जिससे देश में कुशल नेतृत्व की कमी हो गई। वर्तमान में राजनीतिक नेतृत्व जिन लोगों के पास है उनमें गलत का विरोध करने की समुचित शक्ति नहीं है। पाकिस्तान, युगांडा, अफगानिस्तान और बांग्लादेश में जब हिंदुओं का कत्लेआम हुआ, तब किसी भी राजनीतिक दल का नेतृत्व खुलकर विरोध में नहीं आया। वहीं, इजरायल ने गाजा में कार्रवाई की तो भारत के अधिकांश राजनीतिक दलों ने निंदा की। आप जानना चाहेंगे क्यों? क्योंकि इनके पास नेतृत्व, बुद्धिमता और राजनीतिक कुशलता की कमी है। विचार करें यदि कोई राजपूत बड़े राजनीतिक दल का नेतृत्व कर रहा होता तो वह क्या निर्णय लेता? यह प्रश्न मैं समय नाद समाचार पत्र के माध्यम से पाठकों से भी पूछ रहा हूं। उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

गुजरात से शुरू हुआ था पहला रेल यातायात

यह बहुत कम लोग जानते हैं कि भारत में सबसे पहले रेल यातायात कच्छ भुज से शुरू किया गया था, जिसका श्रेय जूनागढ़ की राजपूत रियासत को जाता है। भारत का सबसे बड़ा मानव निर्मित तालाब जूनागढ़ के शासक ने बनवाया था, जो खंगार सागर के नाम से जाना जाता है। वामपंथियों द्वारा विकृत किए राजपूतों के इतिहास सुधारने के प्रयास कुछ इतिहासकारों ने जरूर किए, लेकिन वे अपर्याप्त हैं। इतिहास संकलन के लिए आपको एक रियासत के ही इतिहास की गहराइयों में जाने के लिए कम से कम 6 माह लगते हैं। इतिहास संकलन के लिए सामूहिक रूप से एक टीम बनानी होगी और उसे आर्थिक रूप से भरपूर मदद भी करनी होगी। तभी हम सभी राजपूत रियासतों का वास्तविक इतिहास देश और दुनिया को बता पाएंगे।

(लेखक जूनागढ़, गुजरात के महापराक्रमी चंद्रवंशी सम्राट चूड़ाचंद्र जी के वंशज हैं और सामाजिक कार्यों के साथ इतिहास लेखन में विशेष रुचि रखते हैं।)

स्मृति पथ यात्रा ...

डॉ. सविता सिंह भदौरिया
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय
भोपाल

ब्रिटिश इंडिया में जितने भी राजनीतिक या उग्र आंदोलन हुए, उन सबका लक्ष्य अंग्रेजों को भगाकर अपना अपना राज हासिल करना था, जहां हमारी अनुभूति हो, जहां हम अपने देश और अपने लोगों के लिए सोचें। यूं तो ब्रिटिश उपनिवेश के मुक्त अपना राज्य मिल गया, लेकिन अव्यवस्थाएं अभी तक हावी हैं। यह सोचा ही नहीं गया कि ब्रिटिश इंडिया के बाद बने भारत गणराज्य का स्वरूप क्या होगा? उस समय नहीं सोचने का परिणाम है कि आज भी ऐसी बहुत सी समस्याएं हैं जो अव्यवस्था के लिए जिम्मेदार हैं।

यह समस्या तब पैदा होती है, जब दूसरे विकसित देश के प्रभाव का हम रियलिटी चेक नहीं करते और आंखें बंद करके उनकी सारी चीजें अपना लेते हैं। दूसरे देश का रहन-सहन, तौर-तरीके, खान-पान, शिक्षा, न्याय प्रणाली, शासन व्यवस्था या सामाजिक मूल्यों को अपनाने का दुष्परिणाम यह होता है कि वह देश हम पर शासन करने लगता है। अंग्रेज आज भी भारतीय संस्कृति पर रिसर्च कर रहे हैं, लेकिन हम अंग्रेजियत को छोड़ नहीं पा रहे हैं। उनकी पढ़ाई पद्धी आज भी पढ़ रहे हैं। अंग्रेजी इतनी सिर चढ़ गई है कि हम बड़ी आसानी से कह देते हैं कि हिंदी नहीं आती। इज्म से जुड़े नेशनलिज्म, रेसिज्म, कास्टिज्म, मार्क्सिज्म और न जाने कितने शब्द हर वक्त जुबान पर रहते हैं, जबकि इज्म शब्द ग्रीक वर्ड है जो असमानताओं से भरा हुआ है। यह शब्द सचेत या अचेतन रूप से यह हमारी संस्कृति में उत्पीड़न और असमानताओं को सुदृढ़ करता है। हमें दुनिया की प्रगति का अध्ययन करना चाहिए और यह सोचना चाहिए कि हमारी संस्कृति, हमारी परंपरा इस विश्व को क्या दे सकती है। हमें दीनदयाल उपाध्याय ने प्रेरणा देते हुए कहा- संघर्ष और सहयोग में सहयोग चुनना चाहिए। यदि प्रतिस्पर्धा और संघर्ष है तो हम प्रतिस्पर्धा चुनते हैं। हम अच्छे की तुलना में बुरे को जल्दी चुनते हैं। आगे बढ़ना है तो ये ध्यान में रखकर चलना पड़ेगा। यदि दुनिया में संघर्ष दिख रहा है तो सहयोग को हम नजरंदाज क्यों कर रहे हैं? परस्पर पूरकता को समझने की कोशिश क्यों नहीं करना चाहते?

स्वतंत्रता सेनानियों की आकाशगंगा में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का नाम एक सितारे की तरह है। उन्होंने भारत की एकता और अखंडता और देश के हितों की रक्षा में पूरा जीवन समर्पित कर दिया। अगस्त 1947 में मोहनदास करमचंद गांधी ने पहली राष्ट्रीय सरकार में शामिल होने के लिए श्यामा प्रसाद को आमंत्रित किया था। उन्होंने इस उम्मीद में निमंत्रण स्वीकार किया कि वह स्वतंत्र भारत की प्रारंभिक अवधि में नीतियों को प्रभावित करने में सक्षम होंगे और उन करोड़ों हिंदुओं के हितों की रक्षा करेंगे। उन्हें उद्योग और आपूर्ति मंत्रालय का प्रभार दिया गया। केंद्रीय मंत्रिमंडल में उद्योग और आपूर्ति मंत्री के रूप में उन्होंने तीन सबसे सफल विशाल औद्योगिक उपक्रमों की स्थापना करके देश के औद्योगिक विकास की मजबूत नींव रखी। ये तीन उपक्रम थे चितरंजन लोकोमोटिव फैक्ट्री, सिंधरी फर्टिलाइजर कॉर्पोरेशन और हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट फैक्ट्री,बैंगलोर। उन्होंने प्रत्येक योजना और नीति को उसकी व्यावहारिकता और लोगों के लिए उपयोगिता की कसौटी पर परखा। डॉ. मुखर्जी किसी की भी जिद या अवधारणा से बंधे नहीं थे। नीति के व्यापक मामलों पर (विशेषकर पाकिस्तान के संबंध में, शरणार्थियों को लेकर) जवाहरलाल नेहरू के साथ उनके मतभेद काफी पहले से ही थे। वर्ष 1950 के नेहरू-लियाकत समझौते ने उन मतभेदों को चरम पर पहुंचा दिया था। उस समझौते पर हस्ताक्षर रोकने में असफल होने पर डॉ. मुखर्जी ने मंत्रिमंडल छोड़ने और सरकार के बाहर से नेहरू की नीतियों के विरोध को संगठित करने का निर्णय लिया। इसका प्रभाव भी पड़ा और नेहरू-लियाकत समझौते का मूल मसौदा, जिसने भारत सरकार को विधायिकाओं और सेवाओं में मुसलमानों के लिए सीटें आरक्षित करने के लिए प्रतिबद्ध किया था, इन प्रावधानों को खत्म करने के लिए संशोधित किया गया था। 19 अप्रैल, 1950 को अपने इस्तीफे के बारे में उन्होंने संसद में जो बयान दिया वह भारत-पाक संबंधों का एक गरिमामय लेकिन दयनीय दस्तावेज है। उन्होंने कारण गिनाए कि क्यों नेहरू-लियाकत समझौता किसी भी समस्या का समाधान नहीं करेगा। उस समय सबसे उल्लेखनीय श्रद्धांजलि तो टाइम्स ऑफ इंडिया की ओर से आई थी, जिसमें टिप्पणी की गई कि सरदार पटेल का कार्यभार डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी पर आ गया था। यह सबसे उपयुक्त श्रद्धांजलि थी क्योंकि डॉ. मुखर्जी बाहर से नेहरू सरकार पर उसी तरह का गंभीर और संयमित प्रभाव डाल रहे थे, जैसा सरदार पटेल भीतर से करते रहे थे। डॉ. मुखर्जी ने एकीकरण के लिए कई सुझाव दिये, जैसे भारत से संबंधित मुद्दों से कैसे निपटा जाए और भी बहुत राजनैतिक और सामाजिक परिस्थितियों से परिचित कराया।

डॉ. मुखर्जी ब्रिटिश इंडिया की स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय एकता के लिए शहीद होने वाले पहले व्यक्ति थे। उनकी 1953 में असामयिक मृत्यु हो गई थी। एक खालीपन जिसे भरा नहीं जा सकता।

भारत पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

SACHIN "MAMTA"
HOSPITAL

उपलब्ध विशेषज्ञ
- शिशु रोग विशेषज्ञ
- प्रासूति एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ
- जनरल मेडीसिन विशेषज्ञ
- जनरल सर्जरी विशेषज्ञ
- दुर्घटना एवं ट्रामा केयर विशेषज्ञ
- न्यूरो सर्जरी विशेषज्ञ
- यूरो सर्जरी विशेषज्ञ
- गुर्दा रोग विशेषज्ञ
- अस्थि एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ
- पेट एवं लिवर रोग विशेषज्ञ
- बर्न एवं प्लास्टिक विशेषज्ञ
- फोरेंसिक विशेषज्ञ
- एंडोस्कोपी सर्जरी विशेषज्ञ
- नाक, कान एवं गला रोग विशेषज्ञ

उपलब्ध सुविधायें
- डिजीटल एक्स-रे ई.सी.जी.
- हाईटेक पैथोलॉजी
- समय पूर्व जन्में बच्चों की गहन चिकित्सा इकाई
- आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित वातानुकूलित ऑपरेशन थियेटर
- दूरबीन एवं लेप्रोस्कोपी द्वारा ऑपरेशन की व्यवस्था
- लेवर रुम वेन्टीलेटर मास्टर हेल्थ चेकअप
- पॉलीट्रामा मैनेजमेंट पॉयजन मैनेजमेंट
- एम्बूलेंस सुविधा एन.आई.सी.यू प्राईवेट वार्ड
- जनरल वार्ड एम्बूलेंस सुविधा
- लिफ्ट सुविधा मेडिकल स्टोर सुविधा

Prathviraj Singh Chouhan
Managing Director
9753996033, 9425016531

HIG-39 "A" Sonagiri Chouraha, BHEL, Bhopal (M.P.)

पंडित नहीं, तोमर क्षत्रिय थे रामप्रसाद बिस्मिल

देश को बताई जाएगी बिस्मिल की सही पहचान

इतिहास लेखन में राजपूत इतिहासकारों को करें शामिल

डॉ. श्रद्धा रानी सिंह
प्रोफेसर एंड एचओडी
केमिकल इंजीनियरिंग
राजा बलवंत सिंह कॉलेज

आगरा। अमर शहीद पं. रामप्रसाद बिस्मिल का आगरा से भी गहरा नाता रहा है। उनका असली नाम रामप्रसाद सिंह तोमर था। उन्होंने ब्रिटिश इंडिया की आजादी के आंदोलन के दौरान पिनाहट के पास चंबल के जंगलों में अपने क्रांतिकारी साथियों के साथ शरण ली थी। बड़ी चिंता और अफसोस की बात है कि क्रांतिवीर बिस्मिल का सही नाम तक देश के सामने नहीं लाया गया। अब क्षत्रिय राजपूत संगठन बिस्मिल की सही पहचान देश के सामने लाने का प्रयास करेंगे। साथ ही, मध्यप्रदेश शासन की तरह इतिहास लेखन में दो राजपूत इतिहासकारों को अनिवार्य रूप से सम्मिलित करने का नियम बनवाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार से मांग की जाएगी। उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश की तत्कालीन शिवराज सिंह चौहान सरकार ने इतिहास लेखन समिति में दो राजपूत इतिहासकारों को अनिवार्य रूप से शामिल करने का नियम गत वर्ष ही बनाया है।

मुरैना जिले की पोरसा तहसील के अम्बाह कस्बे के पास नहर किनारे बसे हैं तोमर राजपूत बहुल गांव रूअर और बरबाई। यह क्षेत्र तत्कालीन सिंधिया रियासत का हिस्सा था। पर्याप्त संसाधन नहीं होने के कारण फसल खराब हो जाती थी और लगान को लेकर क्षेत्र में अक्सर विद्रोह के सुर उठते थे। बताया जाता है कि गांव के हालात से परेशान होकर नारायण लाल सिंह तोमर अपनी पत्नी और बेटे मुरलीधर सिंह के साथ बरबाई से उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर चले गए। शाहजहांपुर जिले में 11 जून 1897 को मुरलीधर सिंह तोमर और मूलमती देवी के घर रामप्रसाद सिंह तोमर का जन्म हुआ। रामप्रसाद सिंह ने मकरोस से आठवीं तक उर्दू पढ़ी। इसके बाद उन्होंने मिशनरी स्कूल से अंग्रेजी की शिक्षा ग्रहण की। पिता की अनुमति के बिना उन्होंने उर्दू भी पढ़ी। राम, अज्ञात और बिस्मिल के नाम से हिंदी और उर्दू में रचनाएं कीं। रामप्रसाद सिंह आर्य समाज से जुड़े थे और हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के संस्थापक सदस्यों में से एक थे।

कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन में बिस्मिल क्रांतिकारियों के संपर्क में आए। 1925 में वे क्रांतिकारियों के नेता बने। माना जाता है कि पहचान छिपाने के लिए उन्होंने नाम के आगे पंडित और नाम के बाद में बिस्मिल तखल्लुस लगाया। यह भी माना जाता है कि अनेक विषयों में उनके अच्छे ज्ञान के लिए उन्हें पंडित की उपाधि दी गई थी। मैनपुरी कांड और काकोरी कांड में रामप्रसाद बिस्मिल का नाम आया।

बिस्मिल अपने ननिहाल पिनाहट के जोधापुरा के बीहड़ों में भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, भवानी प्रसाद दुबे, मई बटेश्वर के गेंदालाल दीक्षित समेत क्रांतिकारी साथियों के साथ छिपे रहे। गंगा सिंह, ब्रह्मचारी आदि के साथ मिलकर बासौनी के जंगल में 21 अंग्रेजों को ढेर कर दिया। मुखबिरी के चलते उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था। 19 दिसंबर, 1927 को उन्हें उत्तर प्रदेश की जेल में फांसी दे दी गई। बिस्मिल के पैतृक गांव बरबाई में मध्यप्रदेश शासन ने उनका स्मारक बनवाया है। गोरखपुर समेत देश में अन्य स्थानों पर भी बिस्मिल की स्मृतियां हैं, लेकिन अफसोस कि राजपूत होने की सही पहचान से ये अमर बलिदानी आज भी वंचित है।

Test Name	CRL 1.1	CRL 1.2	CRL 1.3
Lipid Profile	✓	✓	✓
Thyroid Profile	✓	✓	✓
Kidney Function with Calcium	✓	✓	✓
Liver Function with GGT	✓	✓	✓
Complete Blood Count	✓	✓	✓
Complete Urine Examination	✓	✓	✓
Blood Sugar Fasting	✓	✓	✓
HbA1c		✓	✓
Iron Profile			✓
Vitamin B12			✓
Vitamin D 25 - Hydroxy			✓
Special Price	Rs. 730/-	Rs. 1000/-	Rs. 1300/-

नजरिया

आजादी का एक नाम अभय भी है

आजादी का एक नाम अभय भी है। अभय का सिर्फ यही अर्थ नहीं होता कि हम किसी से न डरें बल्कि उसका एक अर्थ यह भी होता है कि हमसे भी कोई न डरे। अभय तभी संपूर्ण होता है। मनुष्य जितना अभय की तलाश करता है उतना ही उसे भयभीत करने वाले सक्रिय हो जाते हैं। अगर भयभीत करने वाले पीछे छूट गए तो उसे ठगने वाले आगे आ जाते हैं। इस संदर्भ में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी का संसद में दिया गया भाषण बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा था डरो मत डराओ मत'। उन्होंने अभय के लिए विभिन्न धर्मों के प्रवर्तकों और देवी देवताओं की अभय मुद्राएं भी प्रदर्शित की। तो क्या यही आजादी है। वह आजादी की पहली और अनिवार्य शर्त है। ईसा पूर्व से लेकर इक्कीसवीं सदी तक आजादी का क्षितिज बहुत बड़ा हो चुका है। उसमें बहुत सारे तत्व शामिल हैं। उसमें खानपान, पहनावे से लेकर पूजा पद्धतियां, सरकार चुनने के तरीकों और अभिव्यक्ति की आजादी से लेकर डिजिटल आजादी तक शामिल है। लेकिन कुछ बुनियादी चीजें तो हैं और हमेशा रहेंगी।

हाल में पड़ोसी देश बांग्लादेश में जो तख्तापलट हुआ उसकी तमाम किस्म की व्याख्याएं हैं। कोई विदेशी साजिश बता रहा है तो कोई भारत विरोधी अभियान बता रहा है तो कोई हिंदू विरोधी बता रहा है। तो कोई आरक्षण विरोधी आंदोलन बता रहा है तो कोई कट्टरपंथ का उभार कह रहा है। यह सारी चीजें हो सकती हैं। लेकिन एक बुनियादी चीज जिसका जिक्र बांग्लादेश के लोग कर रहे हैं लेकिन जिसका जिक्र भारत में कम किया जा रहा है और वो है आजादी का। बांग्लादेश के लोग आर्थिक रूप से समृद्ध हो रहे थे। उनका मानव विकास सूचकांक भारत से भी बेहतर था। लेकिन वे अभय नहीं थे। उनकी आजादी छीनी जा रही थी। मनुष्य लाख भौतिकवादी, उपभोक्तावादी हो जाए लेकिन आजादी उसकी बुनियादी जरूरत है। उससे अगर आप ने सब कुछ लेकर आजादी छीन ली तो एक न

अरुण कुमार त्रिपाठी

एक दिन वह विद्रोह जरूर करेगा। इसीलिए 1857 में भारत के आखिरी मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर ने जो फरमान जारी किया था उसकी पहली लाइन थी कि खुदा ने दुनिया में इंसान जो जितनी नियामतें बख्शत की हैं उसमें सबसे बेशकीमती है आजादी। लेकिन आजादी छीनी तब जाती है जब लोग आजादी की परिभाषा को लेकर बंट जाते हैं। हम 1857 की लड़ाई इसलिए नहीं जीत पाए क्योंकि उस समय हिंदू और मुस्लिम समाज में जितनी एकता होनी थी वह नहीं हो पाई। जब लोग आजादी का मूल अर्थ अभय से लेने की बजाय अपने अपने शासन से लेने लगते हैं और दूसरों को डराने दबाने से लेने लगते हैं तो आज़ादी विभाजित हो जाती है और कमजोर हो जाती है। इसीलिए भारत की गुलामी की एक वजह यह भी बताई जाती है कि यहां जाति और यौन के कटघरे बने हुए थे। सवर्ण अवर्णों को दबाता था तो पुरुष स्त्री को। आजादी का मतलब यह नहीं कि फौज और पुलिस को कार्रवाई की छूट रहे और जनता को सहने की। आजादी का अर्थ यह भी नहीं है जो धनवान है उसे हर प्रकार से धन जमा करने की आजादी हो और जो सामान्य जन है उसे अपने कर का सही मूल्य भी न मिल पाए। आजादी का मतलब यह भी नहीं कि भारत की जनता आजाद रहे और पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका और नेपाल की जनता गुलाम रहे। भारत की आजादी का मतलब दुनिया के कम से कम सौ देशों की आजादी से था। गांधी तो यूरोप को भौतिकवादी हिंसक सभ्यता से आजाद कराने का संकल्प लिए हुए थे। आजादी का मतलब यह नहीं कि हिंदू आजाद रहें और मुसलमान गुलाम रहें। या सवर्ण आजाद रहें और अवर्ण गुलाम रहें। न ही उसका अर्थ पुरुषों की आजादी और महिलाओं की गुलामी से है। न ही इसका मतलब यह है कि आदिवासियों की संपत्ति लूटी जाए और बाकी आबादी समृद्ध होती जाए। वास्तव में आजादी का एक अर्थ बृहदारण्यक उपनिषद के उस श्लोक में निहित है जो महात्मा गांधी को बहुत प्रिय था:—सर्वे भवंतु सुखिना सर्वे संतु निरामय, सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चित दुःख भा भवेत।।

गांधी जी ने आजादी के लिए जिस स्वराज' शब्द का प्रयोग किया था उसे उन्होंने जरूरत से लिया था। स्वराज्य का अर्थ है अपने ऊपर अपना राज। यानी आप के ऊपर कोई सरकार राज नहीं करेगी। बल्कि आप अपने ऊपर स्वयं ही राज करेंगे। उसे ही वे रामराज्य कहते थे। लेकिन उनके लिए रामराज्य का अर्थ मौजूदा हिंदुत्व से निकले रामराज्य से अलग था। वे कहते थे रामराज्य का अर्थ यह नहीं कि अंग्रेज पूंजीपति चले जाएं तो यहां के पूंजीपतियों का राज आ जाए। या अंग्रेजी फौज चली जाए तो यहां की फौज राज करने लगे। इसे न तो स्वराज्य कहेंगे और न ही रामराज्य। लेकिन आजादी के अर्थ को लेकर गांधी के समय के सारे नेता समान धरातल पर नहीं खड़े थे। जैसे आज आजादी और लोकतंत्र को लेकर भाजपा और कांग्रेस एक धरातल पर नहीं हैं। न ही एनडीए और इंडिया समूह एक धरातल पर हैं। गांधी आजादी की जो भी परिभाषा देते थे आंबेडकर उसे खारिज कर देते थे। गांधी मूलतः राजनीतिक आजादी के लिए लड़ रहे थे, जबकि आंबेडकर सामाजिक आजादी के लिए। गांधी को लगता था कि राजनीतिक लड़ाई कठिन है तो आंबेडकर को लगता था कि सामाजिक आजादी की लड़ाई कठिन है। आधुनिक भारतीय राजनीति की यह दोनों धाराएं लंबे समय तक टकराती रहीं लेकिन जब गांधी और आंबेडकर ने एक दूसरे को समझने की कोशिश की तो वे करीब आईं। आज भी गांधी और आंबेडकर के अनुयायी उन दोनों के टकराव पर उसी तरह से बहस करते रहते हैं जिस तरह से गांधी और भगत सिंह के अनुयायी करते हैं। यह इतिहास में अपने को जड़ कर देने जैसा है और वर्तमान के लिए इतिहास के हठी संदेश कंधे पर उठाए घूमने जैसा है। विडंबना यह है कि जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय से लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय और जामिया मिलिया इस्लामिया तक भारत के तमाम बौद्धिकों की नियति यही है। वे इतिहास के प्रमुख और नायकत्व वाले पात्रों के विभेदों का अकादमिक पाठ करते हैं। लेकिन उनके संदेशों और संघर्षों की दार्शनिक एकता नहीं देखते। उन्होंने गांधी और आंबेडकर की आजादी के अर्थों का समन्वय करने का प्रयास ही नहीं किया। उन्होंने यही दर्शाने की कोशिश की कि गांधी कितने बड़े या आंबेडकर कितने बड़े या गांधी कितने छोटे या आंबेडकर कितने छोटे। इस दौरान इतिहास उन लोगों को हाथों में चला गया जिनके पास नायकत्व के गुण ही नहीं थे। फिर वे आजादी के अर्थ को छोटा करने लगे। उनके लिए आजादी का अर्थ अपनी जलवाफरोशी रह गया। ।

अपनी जीत का रिकार्ड कायम करना रह गया। अपनी सफलता रह गई और किसी को डराना, किसी को चिढ़ाना और किसी को धमकाना रह गया। कुछ लोगों के लिए आजादी का अर्थ सिर्फ आरक्षण रह गया तो कुछ लोगों को लिए सिर्फ धार्मिक जुलूस, भड़काऊ नारे और दूसरे धर्मों में छेड़छाड़ का कानून बनाना रह गए।

आजादी के जश्न से विकसित भारत की शुरुआत

अनेक विशेषताओं एवं विलक्षणओं वाले प्रधानमंत्री ने जमीन से जुड़ी प्रतिभाओं को पद्म सम्मान देकर भी भारत के जन-जन को उचित सम्मान देने की परम्परा का सूत्रपात किया है। आज जबकि भारत अपने पडोसी राष्ट्रों की अस्थिर, अराजक एवं हिंसक घटनाओं से घिरा है, जब प्रधानमंत्री ने यह भरोसा दिलाया कि अनेक चुनौतियों के बावजूद भारत सही दिशा में आगे बढ़ रहा है, सुरक्षित और विकसित राष्ट्र का सपना साकार करने को तत्पर है। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के मूल मंत्र को साकार करते हुए मोदी देश की तकदीर एवं तस्वीर बदलने में जुटे हैं। इससे यह तो साफ हो गया कि वे इन बुराइयों से निपटने और उनके खिलाफ जनमत का निर्माण करने के लिए अपने तीसरे कार्यकाल में संकल्प ले चुके हैं। उन्होंने राजनीति ही नहीं बल्कि जन-जन में व्याप्त होते भाई-भतीजावाद एवं परिवारवाद जैसी अनेक विसंगतियों एवं विषमताओं को देश के लिये गंभीर खतरा बताया।

ललित गर्ग

भारत का 78वां स्वतंत्रता दिवस आजादी अमृतकाल के कालखंड के सन्दर्भ में एक विशाल एवं विराट इतिहास को समेटे हुए नये भारत के नये संकल्पों की सार्थक प्रस्तुति देने एवं नये संकल्प बुनने का अवसर है। यह एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना का स्मरण करने से कहीं ज्यादा है, यह भारत की चिरस्थायी भावना, समृद्ध विरासत और इसकी विविध आबादी को जोड़ने वाली एकता का जश्न है। यह स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए बलिदानों का सम्मान करने, पिछले कुछ वर्षों में हासिल की गई प्रगति का जश्न मनाने और निरंतर विकास और समृद्धि से भरे भविष्य की आशा करने का दिन है। 'विकसित भारत' की थीम के साथ इस वर्ष का स्वतंत्रता दिवस भारत की भावी दशा-दिशा रेखांकित करते हुए उसे विश्व गुरु बनाने एवं दुनिया की तीसरी आर्थिक महाताकत बनाने का आह्वान होगा। यह शांति का उजाला, समृद्धि का राजपथ, उजाले का भरोसा एवं महाशक्ति बनने का संकल्प है। कोई भी विकसित होता हुआ देश किन्हीं समस्याओं पर थमता नहीं है। समाधान तलाशते हुए आगे बढ़ना ही जीवंत एवं विकसित देश की पहचान होती है।

स्वतंत्रता दिवस का एक दुर्लभ अवसर है जो इस बात विश्लेषण करता है कि हम कहां से कहां तक पहुंच गए। अंतरिक्ष हो या समंदर, धरती हो या आकाश, देश हो या दुनिया आज हर जगह भारत का परचम फहरा रहा है, भारत ने जितनी प्रगति की है उसे देखकर हर देशवासी को भारतीय होने का गर्व हो रहा है तो इसका श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को दिया जाना कोई अतिश्योक्ति नहीं है, इसकी चर्चा करना राजनीतिक नहीं, भारत की सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक समृद्धि का बखान है। केवल अपना उपकार ही नहीं परोपकार भी करना है। अपने लिए नहीं दूसरों के लिए भी जीना है। यह हमारा दायित्व भी है और ऋण भी, जो हमें अपने समाज और अपनी मातृभूमि को चुकाना है। भारत तो अतीत से विश्व को परिवार मानता रहा है, तभी उसने वसुधैव कुटुंबकम् का मंत्र उद्घोष किया। मोदी ने अतीत की उसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए विश्व को अपना परिवार मानने की भावना का परिचय बार-बार दिया है। हम भारत के लोग विश्व मंगल की कामना की पूर्ति तभी अच्छे से कर सकते हैं जब पहले राष्ट्र मंगल की भावना से ओतप्रोत हों। इसके लिये जो अतीत के उत्तराधिकारी और भविष्य के उत्तरदायी हैं, उनको दृढ़ मनोबल और नेतृत्व का परिचय देना होगा, पद, पार्टी, पक्ष, प्रतिष्ठ एवं पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता को जीना होगा। यही भावना सबल, सक्षम और समरस राष्ट्र बनाएगी और विश्व में भारत का मान बढ़ाएगी, इसी से भारत विश्वगुरु बनेगा।

अनेक विशेषताओं एवं विलक्षणओं वाले प्रधानमंत्री ने जमीन से जुड़ी प्रतिभाओं को पद्म सम्मान देकर भी भारत के जन-जन को उचित सम्मान देने की परम्परा का सूत्रपात किया है। आज जबकि भारत अपने पड़ोसी राष्ट्रों की अस्थिर, अराजक एवं हिंसक घटनाओं से घिरा है, जब प्रधानमंत्री ने यह भरोसा दिलाया कि अनेक चुनौतियों के बावजूद भारत सही दिशा में आगे बढ़ रहा है, सुरक्षित और विकसित राष्ट्र का सपना साकार करने को तत्पर है। 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' के मूल मंत्र को साकार करते हुए मोदी देश की तकदीर एवं तस्वीर बदलने में जुटे हैं। इससे यह तो साफ हो गया कि वे इन बुराइयों से निपटने और उनके खिलाफ जनमत का निर्माण करने के लिए अपने तीसरे कार्यकाल में संकल्प ले चुके हैं। उन्होंने राजनीति ही नहीं बल्कि जन-जन में व्याप्त होते भाई-भतीजावाद एवं परिवारवाद जैसी अनेक विसंगतियों एवं विषमताओं को देश के लिये गंभीर खतरा बताया। इस बार मोदी ने देश के सामने कुछ ऐसी बड़ी चुनौतियों को रेखांकित किया, जिसे लेकर

विपक्ष की भृकुटि कुछ तन गई है। उनके राष्ट्र-संकल्पों में ऐसी किरणे हैं, जो सूर्य का प्रकाश भी देती है और चन्द्रमा की शीतलक भी। और सबसे बड़ी बात, वह यह कहती है कि +अभी सभी कुछ समाप्त नहीं हुआ+। अभी भी सब कुछ ठीक हो सकता है।

आधारभूत ढांचों का विकास किसी देश की क्षमता का स्पष्ट प्रमाण है। स्वतंत्रता के बाद से अब तक भारत ने आधारभूत ढांचों के विकास की कहानी भारत की कुशल नीतियों को वयां करती है। भारत बुनियादी ढांचों के विकास में अब वैश्विक स्तर छू रहा है। भारत दुनिया में बिजली का तीसरा सबसे बड़ा उत्पादक है। बिजली की औसत उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्रों में 20.5 घंटे और शहरी क्षेत्रों में 23.5 घंटे तक पहुंच गई है। ट्रांसयूनियन सीआईबीआईएल की एक रिपोर्ट के अनुसार 2025 तक इंटरनेट के कुल नये यूजर में लगभग 56 फीसदी ग्रामीण भारत से होंगे। जनधन खाता सरकारी योजना के लाभार्थियों के लिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण का एक प्रमुख उपकरण बन गया है। आजादी के पहले पर्यटन जहां तीर्थाटन और देशाटन तक सीमित था, आजादी के बाद व्यवस्थित उद्योग के रूप में विकसित होना शुरू हुआ। आज स्थिति यह है कि पर्यटन के मानचित्र में भारत एक प्रमुख देश के तौर पर दर्ज है। लगातार हुए सरकारी प्रयासों के फलस्वरूप यह उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था का बड़ा संबल भी बना है। हालांकि अभी ऊंचाइयां छूना बाकी है, पर प्रगति की तेजी उल्लेखनीय है। प्रधानमंत्री देश में आतंकवादी वारदातें कम करने, भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने, सरकार के ईमानदारी और पारदर्शिता से काम करने के संकल्पों के साथ आगे बढ़ते हुए गरीबों के कल्याण के लिए ज्यादा से ज्यादा धन खर्च कर रहे हैं और 13.5 करोड़ लोगों को गरीबी रेखा से बाहर निकाला है। निश्चित ही भारत से गरीबी दूर हो रही है। देशवासियों को इस बात का अहसास होने लगा है कि जब देश आर्थिक रूप से मजबूत होता है तो तिजोरी ही नहीं भरती बल्कि देश का सामर्थ्य भी बढ़ता है।?मोदी देशवासियों से परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण के खिलाफ लड़ने का आह्वान करते हुए राष्ट्र को सबल एवं सक्षम बना रहे हैं। हमें आने वाले कल के लिए संघर्ष करना है। हमें विश्व की ओर ताकने की आदत छोड़नी होगी, राजनीतिक संकीर्णता से भी ऊपर उठना होगा, जिन्हें भारत पर विश्वास है, अपनी संस्कृति, अपनी बुद्धि और विवेक पर अभिमान है, उन्हें कहीं अंतर में अपनी शक्ति का भान है, वे जानते हैं कि भारत आज पीछे पीछे चलने की मानसिकता से मुक्ति की ओर कदम बढ़ा चुका है। हमें जीवन का एक-एक क्षण जीना है- अपने लिए, दूसरों के लिए यह संकल्प सदुपयोग का संकल्प होगा, दुरुपयोग का नहीं। बस यहीं से शुरू होता है नीर-क्षीर का दृष्टिकोण। यहीं से उठता है अंधेरे से उजाले की ओर पहला कदम। वाकई देश में सबको अपना कर्तव्य निभाना होगा। प्रधानमंत्री ने उचित ही कहा है कि यदि सरकार का कर्तव्य है- हर समय बिजली देना, तो नागरिक का कर्तव्य है- कम से कम बिजली खर्च करना।

अगर हमने इन संकल्पों को गंभीरता से लिया, तो भारत को विश्वगुरु होने से कोई नहीं रोक सकेगा। एक बार फिर प्रधानमंत्री ने राजनीति से परे जाकर देश को जोड़ने, सशक्त बनाने एवं नया भारत निर्मित करने का सन्देश देते हुए दिखाई दे रहे हैं। इस वर्ष के स्वतंत्रता दिवस की थीम 'विकसित भारत' है। यह थीम 2024 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने के सरकार के दृष्टिकोण का प्रतीक है। यह थीम बुनियादी ढांचे, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, उद्योग, विकास जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करती है। इसकी संपूर्ण झलक हमें कालजयी नेतृत्व मोदी की कार्य-योजना एवं नीतियों मिलती है जो 2047 के विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने का रोडमैप है। जब मोदी का रिफार्म, परफार्म और ट्रांसफार्म अब देश की कार्यसंस्कृति का हिस्सा बन गए हैं। इनके चलते नीतिगत स्थिरता, बेहतर समन्वय और ईज आफ डूइंग बिजनेस की स्थिति बनेगी। यह विषय आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है तथा एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करता है जहां प्रत्येक नागरिक उन्नति कर सके। यह एक समृद्ध, समावेशी और लचीले भारत के निर्माण की सामूहिक आकांक्षा को दर्शाता है, जो आधुनिक प्रगति को अपनाते हुए अपनी समृद्ध विरासत का जश्न मनाएगा। इससे भारत एक आत्मविश्वासी राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित होगा।

सरगुजा में सांप, बिच्छूओं के बीच स्वास्थ्य सेवा का सफर

आज चिकित्सा विज्ञान ने बहुत तरक्की कर ली है, लेकिन आज से चार-पांच दशक पहले तक डॉक्टर्स को मरीजों के इलाज में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता था, उन्हें हम सोच भी नहीं सकते। प्रख्यात चिकित्सक डॉ. एके चौधरी ने उस समय अविभाजित मध्यप्रदेश के सरगुजा जिला अस्पताल में अपनी डॉक्टर पत्नी और साथी चिकित्सकों के साथ सीमित संसाधनों में स्वास्थ्य सेवा की, उसे बेहद सराहनीय और प्रशंसनीय है। इस अस्पताल में अपने सेवाकाल के दौरान जिन विकराल समस्याओं का उन्होंने सामना किया, वे शब्दों में नहीं कही जा सकतीं। सेवा के प्रति समर्पण और मानवता की मिसाल कायम करने वाले डॉ. एके चौधरी से उनकी कहानी, उनकी ही जुबानी जानिए...

डॉ. एके चौधरी
मेडिकल डायरेक्टर
जेके हॉस्पिटल भोपाल

अविभाजित मध्यप्रदेश की सिविल सर्विस एग्जाम पास कर वर्ष 1976-77 में सेवा शुरू की तो पहली पोस्टिंग सरगुजा जिला अस्पताल में हुई। इस अस्पताल में केवल पांच डॉक्टर की तैनात रहते थे। नागरिक सुविधाओं का अभाव था। 200 किलोमीटर से पहले दूध तक नहीं मिलता था। महाराजा सरगुजा के यहां से हॉस्पिटल स्टाफ के लिए गेहूं, चावल आदि चीजें आ जाती थीं, लेकिन बाकी का सामान बिलासपुर से मंगवाना होता था। अंबिकापुर से डॉ. एके चौधरी के मित्र की बस बिलासपुर आती-जाती थी, जिससे यह सामान मंगाया जाता था। 400 किलोमीटर तक कोई मेडिकल एड या मेडिकल कॉलेज नहीं होता था। जिला अस्पताल में जांचों की सुविधा तक नहीं थी। ये डॉक्टर की ओपीडी और इमरजेंसी ड्यूटी करते थे, मेडिको लीगल एनेस्थीसिया देते थे। इसके साथ ही सप्ताह में एक-एक दिन लखपुर, राजपुर, उदयपुर और दरीमा की सैटेलाइट पीएचसी में भी सेवाएं देते थे। डॉ. आशा चौधरी लैप्रोस्कोपिक सर्जरी करती थीं। सौ-दो किलोमीटर तक दुर्गम स्थानों पर जाकर काम करना जटिल चुनौती था।

फर्शाबहार को नागलोक भी बोलते थे। वहां करैत सांप बहुतायत में पाए जाते थे। इसे आस्तीन का सांप भी कहा जाता था और मान्यता है कि इसी सांप ने महाराज परीक्षित को डसा था। इस सांप के काटे का इलाज बहुत मुश्किल था।

शिविर लगाकर 8 दिनों में 1400 से भी अधिक नसबंदी ऑपरेशन करने का रिकॉर्ड भी इन डॉक्टर्स ने बनाया। इस कैम्प साइट पर टेंट लगाकर डॉक्टर और अन्य कर्मचारी रहते थे। ट्रेंच में सांप घूमते थे। मच्छरदानी के ऊपर सांप-बिच्छू दिखाई देते थे। पलंग की ऊंचाई तीन फीट होती थी। गम बूट्स में सांप-बिच्छू छिप जाते थे। सांप के काटने पर लोग सांप को ही घड़े में बंद करके ले आते थे। उनका विश्वास झाड़-फूंक में था, इसलिए डॉक्टर्स को भी इलाज करते समय ओझा-गुनिया जैसा बहाना करना पड़ता था। अस्पताल में एंटी स्नेक वीनम की उपलब्धता रहती थी इसे प्रिजर्व करने के लिए एक अलग से बिजली लाइन अस्पताल को दी गई थी।

मरीजों को बेहोश करने के लिए ईथर और इथाइल क्लोराइड को मुंह पर मास्क रखकर बूंद-बूंद टपकाया जाता था। उस वेपर सिर दुखने लगता था और नींद बहुत आती थी। पूरे ऑपरेशन थिएटर में एनीस्थीसिया उड़ता था। एक व्यक्ति साखीराम डॉ. एके चौधरी का खाना लेकर आता था। बस के गेट से दाहिने हाथ में चोट लग गई थी, जिससे कोहनी की हड्डी टूटकर बाहर निकल आई थी। डॉ. एके चौधरी बालरोग विशेषज्ञ थे, लेकिन उन्होंने साखीराम के हाथ की हड्डी को साफ करने के बाद प्रॉपर जगह पर रखकर टांके लगा दिए। दवाएं लेने के कुछ दिन बाद साखीराम के हाथ की हड्डी बिना किसी नुकसान के जुड़ गई। डॉ. एके चौधरी रात की ड्यूटी पर थे। बरसात की रात के करीब दो बजे होंगे। एक आदमी पेट दर्द की शिकायत लेकर आया। डॉ. चौधरी ने कम्पाउंडर को कहकर दवा दिला दी। करीब एक घंटे बाद भी जब उसका दर्द नहीं रुका तो डॉ. चौधरी स्वयं उठे और उसके पेट से बंधे धोती के फेंटे को हटाने को कहा। धोती का फेंटा खोलते ही उसकी आंतें खुलकर बाहर लटक गईं। फिर डॉ. चौधरी ने डॉ. चक्रवर्ती को बुलवाकर ऑपरेशन थिएटर खुलवाया और आंतों को सैलाइन से साफ करके पेट के अंदर रखकर सिल दिया। तीन दिन बाद उस मरीज ने खाना मांगा और खाना खाने के बाद उसे समय पर दस्त हो गया तो डॉक्टर्स की टीम को बहुत खुशी हुई।

डॉ. आशा चौधरी ने एक महिला के पेट से 18 किलो का ट्यूमर निकाला। उस गरीब महिला ने आठ दिनों तक फिरकी बनाकर बेची और आठ आना पैसे बचाए। वे पैसे लेकर वह डॉ. आशा चौधरी को ऑपरेशन की फीस देने आई। फीस नहीं लेने पर वह महिला डॉक्टर के दरवाजे पर बैठी रोती रही। जैसे ही डॉ. आशा ने फीस स्वीकार की, वह महिला खुश हो गई। जब महिला से खाने के लिए पूछा गया तो उसने बासी खाने की इच्छा जताई। बासी एक तरह का सड़ा हुआ चावल होता है, जिसे छत्तीसगढ़ के गरीब लोग खाते थे।

डॉक्टर अपने स्कूटर पर बैठाकर कैदियों को अस्पताल लाते थे और उनका इलाज करते थे। ऐसे एक वीक का करीब पचास रुपए कैदियों को बच जाता था। इस तरह कैदियों को लाना, ले जाना रिस्क था, लेकिन डॉक्टर्स के विश्वास को कैदियों ने कभी नहीं तोड़ा।

इनके द्वारा 4 किताबें न्यूट्रीशन, कोरोना, बच्चों का पोषण आहार, बच्चों में टीकाकरण आदि विषय पर लिखीं जा चुकी है इसके साथ ही सोशल मीडिया पर भी स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां शेयर कर रहे हैं।

किशोरों के लिए जानलेवा साबित हो सकता है नोमोफोबिया

भोपाल। वर्तमान में मोबाइल फोन की लत आपके किशोरवय बेटे-बेटी को चपेट में लिए हुए हो सकती है। पेरेंट्स को इसे लेकर बहुत सावधानी बरतने की जरूरत है। इस रोग को लेकर समय नाद के संवाददाता अमित कुमार ने जेके हॉस्पिटल के मानसिक रोग विभागाध्यक्ष डॉ. प्रीतेश गौतम से बातचीत की। डॉ. गौतम ने बताया कि आजकल हर बच्चे के हाथ में एंड्रॉयड या स्मार्ट फोन है। स्मार्ट स्टडी के लिए यह एक जरूरत भी बन गया है।

डॉ. प्रीतेश गौतम
प्रोफेसर एंड एचओडी
मनोचिकित्सा विभाग
जेके हॉस्पिटल, भोपाल

क्लासरूम, कोचिंग से लेकर घर तक मोबाइल प्रयोग करना बच्चे के लिए जरूरी हो गया है। इंटरनेट एडिक्शन के चलते बच्चों में एडीएचडी, कंडक्ट डिसऑर्डर और नशे की गिरफ्त में बच्चे आते जा रहे हैं। मोबाइल फोन एडिक्शन को चिकित्सा जगत में नोमोफोबिया नाम दिया गया है। नोमोफोबिया से सबसे ज्यादा प्रभावित 13 से 19 वर्ष के बच्चे हो रहे हैं। नोमोफोबिया की गिरफ्त में बच्चों को धकेलने के लिए पुअर सोशल सपोर्ट, न्यूक्लियर फैमिली, ब्रोकन फैमिली, कम्पेरिजन एंड कॉम्पिटीटिवनेस और ऑनलाइन गेमिंग की अहम भूमिका है। डॉ. प्रीतेश गौतम का कहना है कि नशे की लत टीनेजर्स में तेजी से बढ़ रही है। किशोरों में इंटरनेट एडिक्शन के कारण हुक्का, गांजा, वेव या ई-सिगरेट पीने की लत पड़ रही है। ई-सिगरेट चार्जेबल होती है और इसमें निकोटिन होता है। इसके सेवन से बदबू नहीं आती, लेकिन नुकसान कहीं ज्यादा होता है। गांजा सबसे आसानी से मिलने वाला नशा है। एक किशोर यदि 2 ग्राम गांजा 15-20 दिन इस्तेमाल करता है तो उसमें पागलपन जैसे लक्षण दिखने लगते हैं। दूसरों पर शक करना, बड़ी-बड़ी बातें करना, नींद नहीं आने जैसे लक्षण दिखने लगते हैं। ऑनलाइन गेमिंग से किशोरों में हिंसक प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। साइको बुलिंग की समस्या बढ़ रही है। किशोरों को सेक्सुअल कंटेंट दिखाकर सेक्स के प्रति भ्रांतियां पैदा की जा रही हैं। हाल ही में राजधानी से जेके हॉस्पिटल में एक 16 वर्ष के बच्चे का ऐसा ही केस आया था, जिसने 9 साल की बच्ची का उत्पीड़न करने का प्रयास किया। मोबाइल एडिक्शन से ट्रिगर थम्ब की समस्या, सर्वाइकल स्पॉन्डिलाइटिस जैसी स्वास्थ्य समस्याएं भी हो सकती हैं।

ऐसे करें बचाव

नोमोफोबिया से बच्चों को बचाने के लिए पेरेन्ट्स या अभिभावकों को ज्यादा सचेत रहना चाहिए। एक दिन में बच्चे को एक-दो घंटे से अधिक इंटरनेट यूज नहीं करने दें। साथ ही, बच्चों के सामने स्वयं भी मोबाइल यूज नहीं करें। बच्चों के डेस्कटॉप, लैपटॉप का पासवर्ड पेरेन्ट्स को भी पता होना चाहिए, जिससे उनकी इंटरनेट एक्टिविटी को कभी भी चेक किया जा सके।

व्यवहार की निगरानी करें

पेरेन्ट्स को बच्चों के व्यवहार की निगरानी करनी चाहिए। उनकी रुटीन एक्टिविटीज पर नजर रखनी चाहिए। बच्चा अकेला रहने लगे, किसी से बात नहीं करे, बाहर खेलने जाना बंद कर दे, चिड़चिड़ा हो जाए या उम्र से ज्यादा बड़ी बातें करने लगे तो ध्यान देना चाहिए।

स्वतंत्रता दिवस का जश्न

भोपाल। पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस बड़े ही उल्लास के साथ मनाया गया, सामाजिक,राजनैतिक, व्यापारिक सहित सभी स्थानों पर ध्वजारोहण, देशभक्ति आयोजन, तिरंगा यात्रा सहित अनेकों आयोजन हुए। इसी तरह स्कूल कॉलेजों में भी उल्लास के साथ आजादी का पर्व मनाया गया। इस दौरान महानगर के कोलार रोड स्थित होली क्रॉस पब्लिक स्कूल में भी आजादी की वर्षगांठ धूमधाम से मनाई गई जिसका उत्साह बच्चों में भी देखा गया समारोह में शामिल होने के लिए स्कूल की छात्रा तन्या चौहान अन्य छात्राओं के साथ पहुंची वहीं इसी स्कूल का छात्र तन्मय सिंह चौहान परेड में शामिल होने के लिए तैयार होकर स्कूल पहुंचे।

... प्रेरणा दे रहे हैं समाजसेवी लोकेंद्र सिंह चौहान के कार्य

भोपाल। सेंट्रल मध्यप्रदेश और मालवांचल में प्रमुख समाजसेवी रहे लोकेन्द्र सिंह चौहान का संबंध राजगढ़ जिले की नरसिंहगढ़ तहसील से था। वहां कोटरा का किला उनके पूर्वजों का था। बाद में पंचतलाई गांव में उनके पूर्वजों को जागीर मिली। बैरसिया के मंगलगढ़, कोल्हू, गढ़ा के सोलंकी राजपूत ठिकानों और विदिशा में हाथी वाली हवेली के राठौर राजपूतों में उनके संबंध हैं। उन्होंने वर्ष 1978 में राजधानी स्थित बीएचईएल में प्रशिक्षण के लिए कदम रखा था। एक वर्कर से सफर शुरू करके डिवीजनल इंजीनियर तक उन्होंने विभिन्न दायित्वों को बखूबी संभाला था।

भोपाल सेंट्रल बैंक के तत्कालीन चेयरमैन सुरेन्द्र सिंह सोलंकी की अनुशंसा पर इंटक नेता आरडी त्रिपाठी ने उन्हें संगठन में शामिल किया था। इस संगठन में रहते हुए उन्होंने अलग-अलग कालखंड में कई पदों को सुशोभित किया। इनके द्वारा दस वर्षों से श्रमश्री संस्था के साथ भागवत कथा का आयोजन सम्पन्न करावाये। श्री चौहान कमलनाथ सदभावना मंच से भी जुड़े रहे। सामाजिक कार्य करते हुए उन्होंने न जाने कितने जरूरतमंद लोगों की मदद की। उनका कहना था कि निष्ठावान और ईमानदार व्यक्ति ही सच्चा समाजसेवक हो सकता है। उनके पास श्री राजपूत महापंचायत के वरिष्ठ उपाध्यक्ष का दायित्व भी रहा। एक दुर्घटना में बुरी तरह घायल होने के बाद भी उनके हौसले बुलंद रहे और हर समय समाज कार्य के लिए तत्पर रहते थे। मानव सेवा एवं समाजसेवा के सफर में उन्होंने नए अध्याय रचे। इस सरल और सहज जनसेवक ने 15 जुलाई 2023 को अंतिम सांस ली। आखिरी समय तक क्षत्रिय राजपूत समाज और जनमानस की भलाई के कामों में लगे रहे। उनका जीवन आज भी समाज में लोगों को परोपकार की राह दिखा रहा है। समय नाद परिवार भारत पर्व के अवसर पर उनकी देशभक्ति को याद कर नमन करता है।

सिद्ध संजीवनी आयुर्वेद पंचकर्म एवं रिसर्च सेंटर की ओर से

भारत पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

वैद्य संजय शर्मा (आर्युवेदाचार्य)
9827686579

वैद्य रश्मी पयासी शर्मा (BAMS,MD-Medicine)
9981275258

साकेत नगरः 206, 2ए, भोपाल पब्लिक स्कूल के पीछे, साकेत नगर, भोपाल
कोलार : डीके 1/335, गणगोर भवन के सामने, दानिश कुंज, भोपाल

टाइगर स्टेट में बाघों की मौत पर उठे सवाल

तीन साल में तीन दर्जन के करीब बाघों की मौत

भोपाल। मध्य प्रदेश के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में बाघों की लगातार हो रही मौतों के पीछे अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र का शक गहराता जा रहा है। वन विभाग ने बाघ संरक्षण से जुड़े अंतरराष्ट्रीय एनजीओ और विदेशी नागरिकों की गतिविधियों की जांच शुरू कर दी है।

मध्य प्रदेश में वन्यजीवों का शिकार और बढ़ते अपराधों से वन विभाग की चिंता बढ़ी हुई है। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में बाघों के शिकार में अंतरराष्ट्रीय साजिश का अंदेशा होने के बाद अब प्रदेश में बाघ संरक्षण से जुड़े अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन (एनजीओ) भी जांच के घेरे में आ गए हैं।

एनजीओ की भूमिका की जांच

वन विभाग ऐसे सभी एनजीओ की भूमिका की जांच कराएगा। इनके अलावा उन विदेशी नागरिकों की भूमिका को लेकर भी जांच की जाएगी जो टाइगर रिजर्व में सक्रिय रहे हैं। वे किन लोगों से मिले या उनकी गतिविधियां संदिग्ध तो नहीं थीं, इन सभी बिंदुओं पर पड़ताल की जाएगी। इसके लिए वन्यप्राणी अभिरक्षक ने प्रदेश के सभी टाइगर रिजर्व के फील्ड डायरेक्टरों को पत्र लिखा है। इसके पहले वन विभाग टाइगर रिजर्व के अधिकारियों को नोटिस जारी कर चुका है। यह सारी कवायद बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में 3 साल में 34 बाघों की मौत की जांच रिपोर्ट आने के बाद की जा रही है।

बांधवगढ़ में वर्ष 2021 में 12, वर्ष 2022 में नौ और वर्ष 2023 में 13 बाघों की मौत हुई। सबसे अधिक बाघों की मौत मनपुर बफर जोन में हुई। जांच रिपोर्ट में टाइगर रिजर्व के वन्यप्राणी चिकित्सक को पोस्टमार्टम न करने का दोषी बताया गया है, लेकिन वहां अलग-अलग समय में पदस्थ रहे फील्ड डायरेक्टरों से लेकर वन अमले और काम करने वाले एनजीओ की भूमिका की जांच नहीं की गई। टाइगर रिजर्व में बाघों की मौत सामान्य न होकर शिकार किए जाने की आशंका भी जताई गई है। बता दें, प्रदेश के टाइगर रिजर्वों में लास्ट वाइल्डरनेस फाउंडेशन, एसएलएमसी, विथ पार्टनर विनरोक, वर्टिवर फाउंडेशन, डब्ल्यूआरसीएस पुणे, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ, डब्ल्यूटीआई, डब्ल्यूसीटी सहित अन्य एनजीओ काम कर रहे हैं।

एनजीओ आए संदेह के घेरे में

मध्य प्रदेश को फिर टाइगर स्टेट का गौरव

वैसे, यह तीसरी बार है, जब मध्य प्रदेश को टाइगर स्टेट होने का गौरव मिला है. साल 2022 की गणना में मध्य प्रदेश के छह नेशनल पार्क सहित राज्य में 785 टाइगर पाए गए. 4 साल पहले साल 2018 में हुई गणना में भी मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा 526 टाइगर थे. चार सालों में 259 टाइगर का इजाफा हो गया है. साल 2022 की गणना में बांधवगढ़ नेशनल पार्क में सबसे ज्यादा 165 टाइगर थे. दूसरे नंबर पर कान्हा नेशनल पार्क में 129 टाइगर है. जनगणना में पेंच में 123, पन्ना में 64, सतपुड़ा में 62 और संजय गांधी नेशनल पार्क डुबरी में 20 टाइगर काउंट किये गए हैं.

देश के शीर्ष 5 टाइगर रिजर्व में स्थान

साल 2023 में मध्य प्रदेश के कान्हा नेशनल पार्क और सतपुड़ा टाइगर रिजर्व को मैनेजमेंट इफेक्टिवनेस इवैल्यूशन में देश के टॉप 5 टाइगर रिजर्व में जगह मिली. इस खबर से सूबे के पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान भी गदगद थे. चौहान ने ट्वीट करके कहा था कि,टाइगर का पुनर्स्थापन कोई आसान काम नहीं है, लेकिन ये काम हमने अपने हाथ में लिया और आज हम टाइगर स्टेट हैं. इस उपलब्धि में जितने भी साथी शामिल हैं. मैं उन सभी को हृदय से बधाई और धन्यवाद देता हूं.

माना जा रहा है कि मध्यप्रदेश में टाइगर की आबादी बढ़ने से पर्यटकों की आमद भी लगातार बढ़ रही है. टाइगर स्टेट का दर्जा रखने वाले मध्य प्रदेश में इस कुल 7 टाइगर रिजर्व हैं. जहां बड़ी संख्या में पर्यटक बाघ सहित अन्य जंगली जानवर देखने आते है. मध्य प्रदेश 7 बाघ अभयारण्यों में कान्हा, बांधवगढ़, सतपुड़ा, पेंच, पन्ना, संजय-डुबरी और नौरादेही का रानी दुर्गावती शामिल है।

मध्यप्रदेश शासन

देश की आज़ादी के लिए प्राणों की आहुति देने वाले वीर शहीदों को कृतज्ञतापूर्ण नमन

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

78 वें स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

चौतरफा विकास का परचम लहराता मध्यप्रदेश

युवाओं के लिये गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं व्यावसायिक क्षमता निर्माण के लिए सभी 55 जिलों में पी.एम. कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस प्रारंभ

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर प्रदेश में पहली बार रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव हो रहे आयोजित

संबल योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, आहार अनुदान योजना एवं राशन आपके ग्राम जैसी योजनाओं के माध्यम से गरीब और जरूरतमंदों को सहायता

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना में 1.29 करोड़ महिलाओं को रक्षाबंधन पर प्रतिमाह ₹1250 के अतिरिक्त ₹250 का विशेष उपहार, अब तक ₹ 22 हजार 924 करोड़ की सहायता, लाड़ली लक्ष्मी योजना के माध्यम से बेटियों की शिक्षा और स्वास्थ्य का ख्याल

मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना में 83 लाख से अधिक किसानों को ₹14254 करोड़ की सहायता

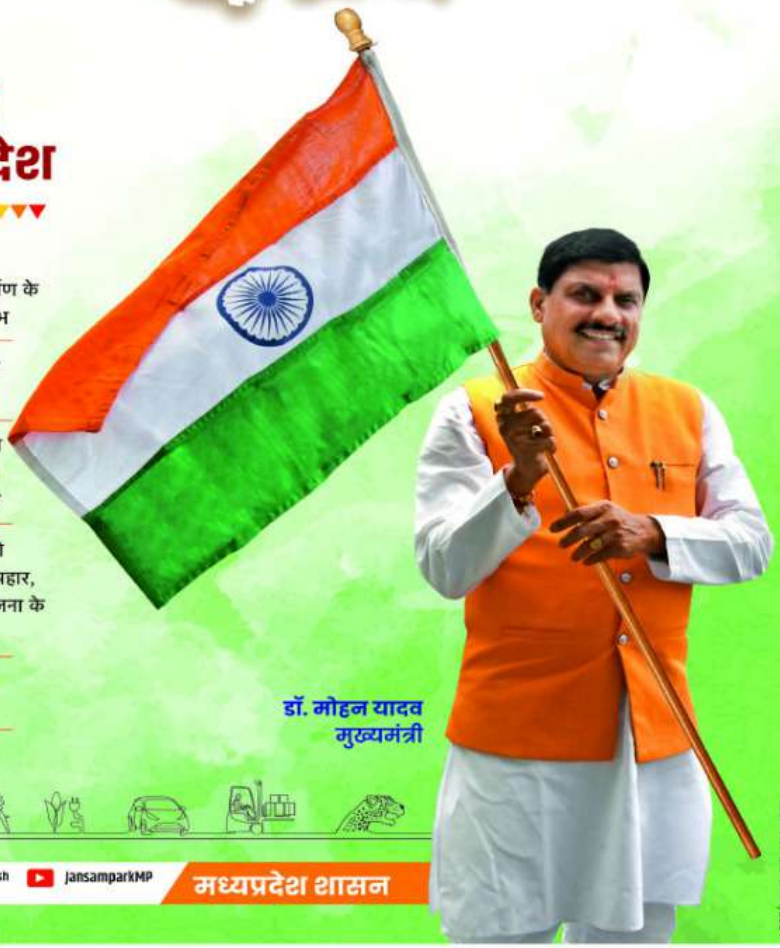

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री

D-18008/24

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से जुड़ने के लिए स्कैन करें

@Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

मध्यप्रदेश शासन

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक दिनेश सिंह भदौरिया द्वारा उमा प्रिंटर्स, प्लॉट नंबर 91, ओल्ड पोस्ट आफिस के सामने, जिंसी, जहांगीराबाद, भोपाल से मुद्रित एवं एस— 16, 17 सेकेंड फ्लोर, गुरुकृपा टॉवर जोन—2, एमपी नगर भोपाल मप्र से प्रकाशित। संपादक- दिनेश सिंह भदौरिया। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल न्यायालय रहेगा।